प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

खेती व प्रकृति के संरक्षण की आवश्यकता बतायी अजय टम्टा ने

पंतनगर। २० फरवरी, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय में आज राष्ट्रीय सस्य विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन केन्द्रीय राज्य कपड़ा मंत्री, श्री अजय टमटा, ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, ने की। इस अवसर पर उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा राज्य मंत्री, श्री धन सिंह रावत, के साथ-साथ हिमालयन एनवायरमेंटल स्टडीज एण्ड कंजरवेशन संस्था के संस्थापक, श्री अनिल पी. जोशी; बिधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बीडी. पात्रा; उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. एस.एन. पशुपालक भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचासीन थे।

अपने मुख्य अतिथि के सम्बोधन में श्री अजय टम्टा ने कहा कि खेती में रसायनों के प्रयोग को कम करते हुए उत्पादन को दोगुना करने पर वैज्ञानिकों को शोध करना होगा। उन्होंने किसानों व खेती को वैज्ञानिकों पर निर्भर बताया तथा उत्तराखण्ड की नदियों, ग्लेशियरों, वनों, ऑक्सीजन व जैविक खेती को देश के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए इनके संरक्षण की आवश्यकता बतायी। श्री टम्टा ने कपड़ा मंत्रालय को सीधे कृषि से जुड़ा होने के कारण अपना कृषि से घनिष्ठ सम्बन्ध जोड़ा।

कुलपति, प्रो. मिश्रा ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में वर्तमान जटिल परिस्थितियों, जिसमें समन्वित उर्वरक, जल, नाशीजीव, इत्यादि, प्रबन्धन; जैविक खेती; अधिक उत्पादन की आवश्यकता; कम होते संसाधन; पर्यावरण में बदलाव इत्यादि जैसी भिन्न-भिन्न परिस्थितियों व चुनौतियां है, में वैज्ञानिकों को सस्य विज्ञान की नई नीतियों के निर्धारण किये जाने को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने हाइड्रोपोनिक्स, एक्वाकोनिक्स, ऊर्ध्वाधर खेती, वानिकी, इत्यादि पर भी ध्यान देने की आवश्यकता बतायी, ताकि बढ़ती जनसंख्या के लिए उत्पादन को बढ़ाया जा सके।

पद्मश्री, अनिल पी. जोशी ने जंगल, मिट्टी व पानी के सवालों तथा जैविक खेती की ओर ध्यान देने तथा गांव, किसान व प्रकृति पर बल दिया। खेती की जमीन की सीमा निर्धारण व राज्य को भोजन में आत्मनिर्भर होना भी उन्होंने आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि खेती को प्रकृति से जोड़ने की शुरूआत इस कांग्रेस से हो रही है, जो संभवतः किसान प्रकृति व वायु को जोड़ते हुए नयी सोच विकसित करने की ओर ध्यान देगी।

डा. बी.डी. पात्रा ने समन्वित पोषक तत्व प्रबन्धन पर बल दिया तथा डा. एस.एन. पशुपालक ने वातावरणीय बदलाव व संसाधनों के समगतिशील प्रयोग को सस्य वैज्ञानिकों के सम्मुख बड़ी चुनौती बताया तथा सस्य विज्ञान के पुनर्रूपांकन पर बल दिया। सत्र के प्रारम्भ में डा. बी.एस. महापात्रा ने सभी अतिथियों व उपस्थित वैज्ञानिकों का स्वागत किया। डा. डी.एस. पाण्डे, विभागाध्यक्ष, सस्य विज्ञान विभाग ने उर्वरकों के प्रयोग की वर्तमान व भविष्य की नीतियों के बारे में बताया तथा सभी विषयों के वैज्ञानिकों की सोच का समावेश करके 'कैप्सूल टैक्नोलॉजी' बनाने की बात कही। कार्यक्रम के अंत में डा. महापात्र ने सभी का धन्यवाद किया।

सस्य विज्ञान कांग्रेस के उद्घाटन सत्र में वैज्ञानिकों को सम्बोधित करते श्री अजय टम्टा।